जिसे अच्छा करने का अधिकार हो, उसे अच्छा करने से मना मत
करो।”

नीतिवचन 3:27 (ERV-HI):
“जब तुम्हारे हाथ में सामर्थ्य हो तो जरूरतमंद को अच्छा
करने से मना मत करो।”

इस पद का क्या अर्थ है?
नीतिवचन की यह शिक्षा एक नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांत देती है: जब किसी व्यक्ति को अच्छा करने का अधिकार हो और हम मदद करने में सक्षम हों, तो हमें उसे अच्छा करने से मना नहीं करना चाहिए।

यह पद दो मुख्य भागों में बंटा है:
“जरूरतमंद को अच्छा करने से मना मत करो…”
“…जब तुम्हारे हाथ में सामर्थ्य हो।”

आइए इन दोनों हिस्सों को विस्तार से समझते हैं।

1. “जरूरतमंद को अच्छा करने से मना मत करो”

यहाँ मूल हिब्रू भाषा का अर्थ है: “अपने हकदार से अच्छा न रोक।” यह कोई ऐच्छिक दान नहीं, बल्कि एक नैतिक दायित्व है। कुछ लोगों को हमारी मदद पाने का न्यायसंगत अधिकार होता है।

जिसे अच्छा करने का अधिकार हो, उसे अच्छा करने से मना मत
करो।”

हमें किसे अच्छा करने का ऋणी होना चाहिए?

(a) अपने परिवार को

बाइबिल परिवार के प्रति जिम्मेदारी को प्राथमिकता देती है।

1 तीमुथियुस 5:8 (ERV-HI):
“यदि कोई अपने परिजन, विशेषकर अपने घरवालों की देखभाल नहीं करता, तो उसने अपना विश्वास अस्वीकार किया और वह अविश्वासी
से भी बदतर है।”

परिवार की उपेक्षा विश्वास से मुंह मोड़ना माना गया है। परिवार की देखभाल अनिवार्य है, इसमें शामिल हैं:

वृद्ध माता-पिता (निर्गम 20:12: “अपने पिता और माता का आदर करो…”)
बच्चे
भाई-बहन
जीवनसाथी

(b) विश्वास के भाइयों-बहनों को (आध्यात्मिक परिवार)

गलातियों 6:10 (ERV-HI):

जिसे अच्छा करने का अधिकार हो, उसे अच्छा करने से मना मत
करो।”

“इसलिए जब तक हमारे पास अवसर है, हम सब के प्रति, विशेषकर विश्वासियों के प्रति, भला करें।”

प्रारंभिक मसीही समुदाय एक विस्तारित परिवार की तरह थे। वे अपने संसाधन बाँटते और एक-दूसरे की देखभाल करते थे (प्रेरितों के काम 2:44–45)।

1 यूहन्ना 3:17-18 (ERV-HI):
“यदि किसी के पास इस संसार की संपत्ति है, और वह अपने भाई को ज़रूरत में देखकर भी उसके लिए अपना दिल बंद कर देता है, तो परमेश्वर का प्रेम उस में कैसा रहेगा? हे बच्चों, हम शब्दों
और जीभ से नहीं, पर कर्म और सच्चाई में प्रेम करें।”

इसमें शामिल हैं:

विधवाएं जो कलीसिया के नियमों के अनुसार हैं (1 तीमुथियुस 5:3-10)
सच्चे सुसमाचार सेवक (1 कुरिन्थियों 9:14: “इस प्रकार प्रभु ने भी आज्ञा दी कि जो सुसमाचार प्रचारते हैं वे सुसमाचार से जिएं।”)

(c) गरीब और जरूरतमंद

बाइबिल बार-बार गरीबों, अनाथों, विधवाओं और परदेशियों की

जिसे अच्छा करने का अधिकार हो, उसे अच्छा करने से मना मत
करो।”

देखभाल का आह्वान करती है।

गलातियों 2:10 (ERV-HI):
“पर हम गरीबों को याद रखें, जैसा मैंने भी खुश होकर किया।”

गरीबों की सहायता श्रेष्ठता का प्रदर्शन नहीं, बल्कि न्याय और दया की अभिव्यक्ति है। परमेश्वर स्वयं गरीबों का रक्षक है:

नीतिवचन 19:17 (ERV-HI):
“जो गरीब से दया करता है, वह यहोवा को उधार देता है, और वह उसे उसके अच्छे काम का फल देगा।”

इसमें शामिल हैं:

बेघर
विकलांग
जरूरतमंद पड़ोसी
संकट में पड़े परदेशी (व्यवस्थाविवरण 10:18-19)

जिसे अच्छा करने का अधिकार हो, उसे अच्छा करने से मना मत
करो।”

2. “जब तुम्हारे हाथ में सामर्थ्य हो”

यह भाग समझदारी और सीमाओं पर बल देता है। परमेश्वर हमसे वह देने की अपेक्षा नहीं करता जो हमारे पास नहीं है। उदारता आत्मा से प्रेरित और विवेकपूर्ण होनी चाहिए।

2 कुरिन्थियों 8:12-13 (ERV-HI):
“क्योंकि यदि दिल से इच्छा हो, तो जो किसी के पास है उसके अनुसार दिया जाए, न कि जो उसके पास नहीं है। ताकि दूसरों को आराम मिले और तुम दबलाए न जाओ।”

दान सद्भाव से होना चाहिए, दायित्व या दबाव से नहीं। परमेश्वर दिल देखता है, मात्रा नहीं।

संतुलित जीवन के लिए सुझाव:

दूसरों की मदद करने के लिए अपने परिवार की जिम्मेदारी न छोड़ें।
अपनी सामर्थ्य से अधिक न दें, जब तक कि विश्वास से प्रेरित न हों।
असली जरूरतों को नजरअंदाज न करें क्योंकि आपको डर हो कि आप खुद कम पड़ जाएंगे।

लूका 6:38 (ERV-HI):
“दो, तुम्हें भी दिया जाएगा; अच्छी, दबाई हुई, हिली हुई और
भरी हुई माप तुम्हारे गोद में डाली जाएगी।”

जिसे अच्छा करने का अधिकार हो, उसे अच्छा करने से मना मत
करो।”

नियम यह है: जो विश्वासपूर्वक अपने दायित्वों को निभाते हैं, परमेश्वर उन्हें और अधिक आशीर्वाद देता है।

दार्शनिक दृष्टिकोण

यह पद बाइबिल के मूल्यों—न्याय, दया और जिम्मेदारी—को दर्शाता है। परमेश्वर हमें केवल अच्छे इंसान बनने के लिए नहीं बल्कि धरती पर उसके न्याय के यंत्र बनने के लिए बुलाता है:

परमेश्वर का चरित्र प्रतिबिंबित करना—दयालु और न्यायपूर्ण
स्वर्ग की शासन व्यवस्था का प्रचार करना—हमारे माध्यम से उसका राज्य फैलाना दैनिक जीवन में पवित्रता और प्रेम दिखाना

निष्कर्ष

नीतिवचन 3:27 केवल उदारता का आह्वान नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और न्याय की पुकार है। मदद करें:

जिनके प्रति आपकी बाइबिल में जिम्मेदारी है,
जो सचमुच ज़रूरत में हैं,
और जब आपके पास मदद करने के साधन हों।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

जिसे अच्छा करने का अधिकार हो, उसे अच्छा करने से मना मत
करो।”

समझदारी और तत्परता से कार्य करें क्योंकि आपकी मदद अंततः परमेश्वर की सेवा है।

मत्ती 25:40 (ERV-HI):
“जो तुमने इन में से किसी छोटे भाई को दिया, वह मुझे दिया।”

परमेश्वर आपको आशीर्वाद दे और आपके जीवन में जो भी अच्छी चीज़ें उसने दी हैं, उन्हें आप एक विश्वसनीय व्यवस्थापक बनाएं।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp